ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol-2* Issue-10* November- 2017
Innovation The Research Concept

भारतीय समाज में बढ़ती बाजारवादी प्रवृत्ति : सरोगेसी (एक समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य)

सारांश

वैश्वीकरण से उपजे बाजारवाद में पारिवारिक व्यवस्था के अधारस्तम्भ रहे तत्व जैसे– विवाह, प्रजनन, सहयोग, भावनात्मक लगाव भी आ चुके हैं और इसी कारण भारत जेसे परम्परागत समाज में सरोगेट माँ अर्थात् स्थानापन्न मतृत्व और मिल्क बैंक जैसी अप्रत्याशित घटनायें सम्पन्न हो रही है।

रिश्तों का समाजशास्त्र बताता है सामाजिक विधि विधान से जुड़ी नैतिक रति क्रियाओं ओर तत्पश्चात् माँ के सीने से छलकते असीम वात्सल्य एवं पिता के दुराल की छाँव में ही शिशु का सामाजिक, सांस्कृतिक व्यक्तित्व तैयार होता है। यह कार्य न तो किराये की कोख कर सकती है और न ही जैवकीय माँ, पिता और न ही व्यवसायिक परिदृश्य।

मुख्य शब्द : बाजारवाद, भूमण्डलीकरण, सामाजिक सांस्कृतिक परिवर्तन, सरोगेसी, सरोगेट माँ, स्थानापन्न मातृत्व, लिव इन कपल, आई0वी0एफ0।

नेहा जैन
सहायक प्राध्यापक,
समाजशास्त्र विभाग,
बी० आर० ए० शासकीय
स्नातकोत्तर महा.,
फतेहपुर

प्रस्तावना

वर्तमान युग बाजार और उससे उत्पन्न सांस्कृतिक परिवर्तनों एवं चिंताओं का है। बाजार मानव सभ्यता में समाज की अवधारणा के स्थापित होने की प्रक्रिया के साथ ही आकार लेता गया। बाजार वस्तुओं के क्रय विक्रय के केन्द्र मात्र नहीं थे बल्कि मिलने जुलने के, सांस्कृतिक व वैचारिक विनिमय के स्थान भी थे।

बाजारवाद परम्परागत सामाजिक मूल्यों को भी तोड़ता है। पैसा कमाने हेतु कोई भी पेशा निम्न नहीं माना जाता। बाजारवाद के नियन्त्रण वाला समाज नया होगा। नये मूल्यों के साथ जहाँ कोई भी पेशा अपवित्र नहीं माना जायेगा। भारत में बाजारवाद की क्रान्ति भूमण्डलीकरण से अविभाज्य रूप से जुड़ी है। बाजारवाद की संस्कृति में व्यक्ति उपभोक्ता बन जाता है।

मानवनिर्मित बाजार, मानव पर ही हावी क्यों हो गया? इसके कारणों पर चिंतन करने पर हम पाते हैं कि तकनीकि के विकास के साथ जैसे–जैसे सपने यथार्थ से दूर होते गये वैसे–वैसे बाजार हमारे मनोमस्तिष्क पर हावी होता गया।

बाजारवादी प्रवृत्ति, वह मत या विचारधारा जिसमें जीवन से सम्बन्धित हर वस्तु का मूल्यांकन केवल व्यक्तिगत लाभ या मुनाफे की दृष्टि से ही किया जाता है वैश्वीकरण से उपजे बाजारवाद में पारिवारिक व्यवस्था के अधारस्तम्भ रहे तत्व जैसे– विवाह, प्रजनन, सहयोग, भावनात्मक लगाव भी आ चुके हैं और इसी कारण भारत जेसे परम्परागत समाज में सरोगेट माँ अर्थात् स्थानापन्न मतृत्व और मिल्क बैंक जैसी अप्रत्याशित घटनायें सम्पन्न हो रही है।

मानव विकास रिपोर्ट 2000, संयुक्त राष्ट्र संघ विकास के अन्तर्गत प्रकाशित मानव संसाधन रिपोर्ट में वैश्वीकरण की चार विशेषतायें बतायी गयी हैं–

1. नये बाजार।
2. नये उपकरण।
3. नये एक्टर/कर्ता।
4. नये नियम जिसमें सारे काम संविदा के आधार पर होते है।

इन नये बाजारों में किराये की कोख, नये उपकरण के रूप में तकनीकि, नये एक्टर के रूप में सरोगेट माँ की भूमिका और संविदा पर आधारित प्रजनन प्रक्रिया प्रभावी होती जा रही है।

सरोगेट के शाब्दिक अर्थ को जानने पर पता चलता है कि यह शब्द लैटिन भाषा के सब्रोगेरे से निकला है जिसका अर्थ है। किसी के लिये

स्थानापन्न बनना। हालांकि प्रसव के लिये दूसरी महिला के प्रयोग की चर्चा 'ओल्ड टेस्टामेन्ट' में भी आती है। जब साराह की आया हेगर ने अपनी निःसंतान मालकिन के लिये बच्चे को जन्म देने के कारण अब्राम से झूठ बोल दिया था।

सरोगेट एक प्रकार समझौता है इसमें निःसंतान दम्पत्ति सरोगेट माँ का चयन करके दोनों पक्ष एक कानूनी करारनामा करते हैं जिसमें धन के भुगतान का विवरण अंकित होता है। आज जहाँ सब बिकता है वहाँ हमने माँ और ममता को भी बेच दिया, कितना आगे निकल गया है मानव? ममता शब्द पर भगवान भी नतमस्तक हो जाते हैं, आज बिकने लगी है। आज भारत जैसे गरीब और विकासशील देश में यह प्रक्रिया एक व्यवसाय की भाँति हो गयी है।

अध्ययन के उद्देश्य

1. इस अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य परम्परागत भारतीय समाज में बदलते वैवाहिक व पारिवारिक मूल्यों को ज्ञात करना है।
2. भारत में बढ़ते सरोगेसी के प्रमुख कारणों को ज्ञात करना।
3. समाज में बदलते मातृत्व के प्रति महिलाओं के दृष्टिकोण को जानना।
4. सरोगेसी की प्रक्रिया में बदलती मानवीय संवदनाओं की प्रकृति को जानना।
5. सरोगेसी के माध्यम से गोद लेने वाले दम्पत्ति निःसंतान है या अन्य कारणों से।
6. सरोगेसी के माध्यम से होने वाले महिला शोषण की वास्तविक वस्तुस्थिति को ज्ञात करना।

तथ्य बताते हैं कि सरोगेट माँ बनने की प्रक्रिया में ज्यादातर निर्धन महिलायें आगे आयी है। वजह साफ है 'गरीबी।' जब पुरुष गरीबी की वजह से अपनी किड़नी और खून बेचने को तैयार है ताकि उसके घर में चूल्हा जल सके तो ठीक वैसे ही महिलायें भी गरीबी के कारण अपनी कोख में दूसरे के बच्चे को पाल लेती हैं। बांझपन भी सरोगेसी का एक प्रमुख कारण है लेकिन आज कई नामचीन हस्तियाँ अपनी संतान होने के बावजूद सरोगेसी के जरिये पितृत्व व मातृत्व का सुख ले रहे है। ये तथ्य बदले परिवेश को इंगित कर रहे हैं। बिना विवाह, परिवार है? ऐसे में समाज में विवाह व परिवार जैसी संस्थायें स्वयं के अस्तित्व को बचा पायेगी। पहले ही इनका स्वरूप बदल चुका है। भारत एक सरोगेसी हब की तरह उभर रहा है जिसमें विदेशी ग्राहक ज्यादा है क्योंकि यहाँ यह प्रक्रिया कम खर्च में है। एन्थोनी गिडेन्स ने भी कहा है ''आज सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक सम्बन्ध ऐसे है जो राष्ट्रीय सीमाओं को लांघकर देशों के बीच की दशाओं और भाग्य को निर्धारित करती है।'' बाजार शक्तिशाली हो गया है। सरोगेसी की पूरी प्रक्रिया विशुद्ध रूप से धन के आदान प्रदान एवं मुनाफे पर आधारित है जिसमें मानवीय संवेदनायें पृष्ठभूमि में चली गयी है।

इस प्रक्रिया का सबसे नकारात्मक पक्ष है इसमें गरीब व अशिक्षित महिलाओं का शोषण होता है वहीं उनके शरीर पर बुरा प्रभाव पड़ता है, दलालों के कारण उन्हें काफी कम पैसा प्राप्त होता है। गुजरात के आणंद जिले में डॉ0 नयन पटेल एक अस्पताल चलाती हैं जिसे 'बेबी फैक्ट्री' के नाम से जाना जाता है। यहाँ सरोगेट माँ नौ माह तक रहती है और यहीं बच्चे को जन्म देती है। बच्चा हो जाने के बाद इन महिलाओं को घर जाने की इजाजत दी जाती है। अगर यहाँ कोई महिला सरोगेसी से जुड़वा बच्चों को जन्म देती है तो उसे करीब सवा छह लाख रुपये तक मिल जाते हैं और यदि किसी कारण से गर्भपात हो जाता है तो कुछ पैसा देकर छुट्टी कर दी जाती है जबकि सफल गर्भावस्था के लिये अस्पताल दम्पत्ति से लगभग 18–20 लाख रुपये लेता है।

भारत में सरोगेसी में महाराष्ट्र अग्रणी है। इसके बाद गुजरात, आन्ध्र प्रदेश और दिल्ली का नम्बर आता है। ये प्रक्रिया महानगरों में भी विस्तार कर रही है। उ0प्र0 के आगरा शहर में तकरीबन 60–70 महिलायें मौजूद हैं जो प्रतिवर्ष 35 से 50 निःसंतान दम्पत्तियों को संतान सुख दे रहीं हैं। इसमें 2.50 से 6 लाख रुपये तक का खर्च आता है।

रेनबो अस्पताल में अध्ययन के दौरान अपनी पहचान छिपाने की शर्त पर एक सरोगेट माँ ने बताया कि 'नौ माह तक को कोख में रखकर फिर पलभर में बच्चे को छोड़ना आसान नहीं होता। वैसे तो मिलते हैं 2.5 से 3.5 लाख तक लेकिन सबसे बड़ा दर्द होता है बच्चे की जुदाई। इन सब प्रक्रियाओं में माँ व बच्चे के बीच का वात्सल्य कहीं गयाब है। इन प्रक्रियाओं में माँ व शिशु के बीच होने वाले संवाद गायब है। रिश्तों का समाजशास्त्र बताता है सामाजिक विधि विधान से जुड़ी नैतिक रति क्रियाओं ओर तत्पश्चात् माँ के सीने से छलकते असीम वात्सल्य एवं पिता के दुराल की छाँव में ही शिशु का सामाजिक, सांस्कृतिक व्यक्तित्व तैयार होता है। यह कार्य न तो किराये की कोख कर सकती है और न ही जैवकीय माँ, पिता और न ही व्यवसायिक परिदृश्य।

अध्ययन के अगले पड़ाव में म0प्र0 के सबसे बड़े व्यवसायिक शहर इन्दौर में पता चला कि प्रदेश में सबसे ज्यादा आई0वी0एफ0 सेन्टर इसी शहर में हैं यहाँ तक कि सरोगेट माँ के लिये अस्पतलों ने हॉस्टल भी शुरू की है। इन्दौर के एल0आई0जी0 क्षेत्र में इसी तरह का एक बड़ा हॉस्टल है। यहाँ गर्भवती महिलाओं को अलग–अलग कमरे दिये गये हैं। संचालक निर्भय कुमार खाब्या के अनुसार इन्दौर की अच्छी चिकित्सा के कारण कई राज्यों से आयी गर्भवती महिलायें हॉस्टल में रहती है।

निष्कर्ष

वैश्वीकरण और बाजारवाद से उपजी उत्तर आधुनिकता में बच्चों के जन्म के प्रति लोगों की सोच बदल रही है इसी कारण नारीत्व, मातृत्व की भूमिकायें, परिवार व विवाह जेसी संस्थायें अपने अस्तित्व के संकट से जूझ रही हैं।

सरोगेसी रेगुलेशन बिल 2016 के प्रभावी रूप लेते ही किराये की कोख लेना–देना गैर कानूनी हो जायेगा। नये कानून के मुताबिक विदेशी नागरिक, एकल पिता या माता, समलैंगिक जोड़े, बिना फेरे हम तेरे अर्थात् लिव इन कपल और पहले से संतान वाले दम्पत्ति सरोगेसी का इस्तेमाल नहीं कर पायेंगे। बिल में यह भी

प्रावधान है कि एक महिला एक ही बार सरोगेट माँ बन पायेगी।

1. किसी अविवाहित को सरोगेट माँ नहीं बनाया जा सकता।
2. देश में 2000 से ज्यादा सरोगेसी क्लीनिक को रजिस्ट्रेशन करना अनिवार्य है।

भारत में लगभग 7 अरब डॉलर के सरोगेसी व्यापार पर सख्त नियम बनाने की आवश्यकता इसलिये भी रही क्योंकि सरोगेसी में लड़की पैदा होने पर भ्रूण हत्या के मामले भी तेजी से बढ़े। इस बिल के पारित होने के बाद सिर्फ ऐसे भारतीय सरोगेसी करा सकते हैं जिनकी 5 साल पूर्व शादी हुई हो। जिनकी कोई संतान न हो और जो साबित कर सके कि वह मेडिकली बच्चे नहीं पैदा कर सकते हैं।

अमेरिका, बिट्रेन समेत ज्यादातर देश सरोगेसी को गैर कानूनी करार दे चुके हैं। नेपाल व थाइलैण्ड ने पिछले वर्ष ही सरोगेसी पर रोक लगायी है। अभी सिर्फ रूस, यूक्रेन जैसे कुछ देशों में ही सरोगेसी की सुविधा है जो अत्यधिक खर्चीली है लिहाजा भारत अभी इसका फलतः फूलतः बाजार है। लैविट का यह कथन प्रमुखता पा रहा है 'Act Local Think Global'

सन्दर्भ ग्रन्थ–सूची

1. *दोषी एवं जैन– समाजशास्त्र : नई दिशायें, पृष्ठ संख्या– 395, रावत पब्लिकेशन, नई दिल्ली एवं जयपुर।*
2. *एस0एल0 दोषी– आधुनिकता एवं उत्तरआधुनिकता, पृष्ठ संख्या– 321, रावत पब्लिकेशन जयपुर।*
3. *भारत 2016, भारत सरकार–*

समाचार पत्र–पत्रिकायें

1. *विशेष गुप्ता, किराये की कोख का अर्थशास्त्र (लेख), अमर उजाला, जुलाई, 2008*
2. *रवि कुमार मिश्र, वैश्वीकरण और सामाजिक सांस्कृतिक परिदृश्य, हिन्दुस्तान, 2004*
3. *योगेन्द्र सिंह, भारतीय परम्परा का आधुनिकीकरण रावत पब्लिकेशन*
4. *विज्ञान प्रगति, वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद्।*